Date : 29-02-2020.

श्री गणेशाय नमः।

This Book Contains –
॥ श्री श्री चण्डिका माला महामन्त्र ॥ (Easy To Learn)

॥ एक आवश्यक सूचना ॥
इस माध्यम से दी गयी जानकारी का मुख्य उद्देश्य सिर्फ उनलोगों तक देवी-देवताओं के स्तोत्र , कवच आदि का ज्ञान सरल शब्दों में देना-पहुँचाना है, जो इसको जानने-सीखने के इच्छुक है।

यह सिर्फ देखने-सुनने-पढ़ने-और-सीखने के उद्देश्य से बनाई गयी है।
वेद - शास्त्र, ग्रंथों और अन्य पुस्तकों मे दिया हुआ बहुमूल्य ज्ञान देखने-पढ़ने-सुनने-समझने-जानने और संजो कर सुरक्षित रखने योग्य है।
पर इस जानकारी का गलत तरीके से उपयोग, या प्रयोग आपका नुकसान कर सकता है। अतः सावधान रहें।
इससे होने वाले किसी भी तरह की लाभ-हानि के लिये हम जिम्मेवार नही होंगे।
(धन्यवाद)

For More Such Article on Stotra, Sahastranaama, kavach :
https://sanskritdocuments.org

< Thanks > < Share >

This Article is Prepared / formatted by : V. K. Rakesh,
Email: VIKY1966@YAHOO.CO.IN

॥ श्री श्री चण्डिका माला महामन्त्र ॥

ॐ गणेशाय नमः । ॐ नमः शिवाय । ॐ श्री गुरुवे नमः ।

विनियोगः -ॐ अस्य श्री चण्डिका-माला-मंत्रस्य मार्कण्डेय ऋषिः,
अनुष्टुप् छन्दः, श्री चण्डिका देवता, ॐ ह्रः बीजम्, ॐ सौं शक्तिः ,
ॐ ह्रौम् कीलकम्, श्री चण्डिका-प्रसाद-सिद्धयर्थं, सकल-जन-वश्यार्थं ,
श्री-चण्डिका-माला-मंत्र जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यासः –

मार्कण्डेय ऋषये नमः शिरसि । अनुष्टुप् छन्दसे नमः मुखे ।
श्री चण्डिका देवतायै नमः हृदि । ॐ ह्रः बीजाय नमः गुह्ये ।
ॐ सौं शक्तये नमः पदयोः। ॐ ह्रौम् कीलकाय नमः नाभौ । विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ।

करन्यासः -

ॐ ह्रां फ्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः । ॐ ह्रीं फ्रीं तर्जनीभ्यां नमः ।
ॐ ह्रूं फ्रूं मध्यमाभ्यां नमः । ॐ ह्रैं फ्रैं अनामिकाभ्यां नमः ।
ॐ ह्रौं फ्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः । ॐ ह्रः फ्रः करतल-कर पृष्ठाभ्यां नमः ।

हृदयादिन्यासः -

ॐ ह्रां फ्रां हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं फ्रीं शिरसे स्वाहा । ॐ ह्रूं फ्रूं शिखायै वषट् ।
ॐ ह्रैं फ्रैं कवचाय हुं । ॐ ह्रौं फ्रौं नेत्र-त्रयाय वौषट् । ॐ ह्रः फ्रः अस्त्राय फट् ।

॥ ध्यानम (मूल)॥

ॐ कल्याणीं कमलासनस्थ-शुभदां गौरीं ,
घनश्यामलामाविर्भावित भूषणामभय-दामार्द्रैकरक्षैः शुभैः ।१।
श्रीं ह्रीं क्लीं वरमंत्रराजसहितामानन्द-पूर्णात्मिकां ,
श्री शैले भ्रमराम्बिकां शिवयुतां चिन्मात्र-मूर्तिं भजे ।२।

॥ ध्यानम (सरल शब्दों में)॥

ॐ कल्याणीं कमल-आसनस्थ-शुभदां गौरीं घनश्यामलाम-
आविर्भावित भूषणाम्-अभय-दाम्-आर्द्रैक-रक्षैः शुभैः ।१।
श्रीं ह्रीं क्लीं वर-मंत्र-राज-सहिताम-आनन्द-पूर्ण-आत्मिकां ,
श्री शैले भ्रमर-अम्बिकां शिवयुतां चिन्मात्र-मूर्तिं भजे ।२।

पञ्चपूजा - मानसिक पूजन /   [देव्यै या देवी प्रीत्यर्थे]

ॐ "लं" पृथिव्यात्मकं श्री चण्डिका देव्यै गन्धं समर्पयामि ।

ॐ "हं" आकाश-तत्वात्मकं श्री चण्डिका देव्यै पुष्पं समर्पयामि ।

ॐ "यं" वायु-तत्वात्मकं   श्री चण्डिका देव्यै धूपम् आघ्रापयामि ।

ॐ "रं" अग्नि-तत्वात्मकं श्री चण्डिका देव्यै दीपं दर्शयामि ।

ॐ "वं" अमृत-तत्वात्मकं श्री चण्डिका देव्यै अमृतं महानैवेद्यं निवेदयामि ।

==ॐ "वं" जल-तत्वात्मकं श्री चण्डिका देव्यै अमृतं महानैवेद्यं निवेदयामि ।

ॐ "सं" सर्व-तत्वात्मकं श्री चण्डिका देव्यै ताम्बूलं समर्पयामि ॥

ॐ "सं" सर्व-तत्वात्मकं श्री चण्डिका देव्यै सर्वोपचारार्थे ताम्बूलं समर्पयामि ॥

(*सर्वोपचारपूजां =सर्व-उपचार-पूजां)

मानसिक पञ्चपूजा = इसे मानसिक पूजा भी कहते हैं । इसमे महाभूतों के बीजाक्षरों "लं, हं, वं, रं, यं इत्यादि" का प्रयोग करते हैं ।

॥ माला मन्त्र ॥

ॐ ह्ः ॐ सौं ॐ वैं, ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं, श्री-जय-जय चण्डिका

चामुण्डे चण्डिके, त्रि-दश-मुकुट-कोटि-संघट्टित-चरणारविन्दे ,

गायत्रि, सावित्रि, सरस्वती अहिकृताभरणे भैरव-रूप-धारिणी,

प्रकटित दंष्ट्रोग्र-वदने, घोरानन-नयने, ज्वलज्-ज्वाला-सहस्त्र-परिवृते

महाट्टहास-धवलीकृत दिगन्तरे, सर्व-युग-परिपूर्णे कपाल-हस्ते

गजाजिनोत्तरिय-भूत वेताल-परिवृते अकम्पित-धाराधरे

मधु-कैटभ-महिषासुर, धूम्र-लोचन, चण्ड-मुण्ड, रक्त-बीज,

शुम्भ-निशुम्भ दैत्य निकृन्ते, महामाये शिवे नित्ये,

ॐ ऐं ह्रीं ऐन्द्रि आग्नेयी याम्ये नैऋति वरूणि वायवि कौबेरि ऐशानि

ब्रह्म-विष्णु-शिव-स्थिते त्रिभुवन-धराधरे वामे ज्येष्ठे रौद्रि

अम्बिके ब्राह्मी माहेश्वरी कौमारी वैष्णवी, वाराहीं-इन्द्राणी

ईशानी महालक्ष्मीः इति स्थिते, महोग्रविष महाविषोरग-फणा मणि-मुकुट-रत्न महा-ज्वाला मलमणि महाहिरार-बाहुक-होत्तमांग, नवरत्न-निधि कोटि-तत्व बाहुजिनावाणी, शब्द-स्पर्श, रुप-रस-गन्धात्मिके क्षितिसाहस मध्य-स्थिते, महोज्वल महाविषोपविष, गन्धर्व-विद्याधराधिपते, ॐ ऐंकार, ॐ ह्रींकार, ॐ क्लींकार हस्ते,
आं ह्रीं क्रौं अनग्नेन-नग्ने-पाते प्रवेशय-२, ॐ द्रां द्रीं शोषय-२,
ॐ द्रां द्रीं मोहय-२, ॐ क्लां क्लीं दीपय -२, ॐ ब्लूं-ब्लूं सन्तापय-२,
ॐ सौं सौं उन्मादय-२, ॐ म्लैं म्लैं मोहय-२, ॐ खां खां शोधय-२,
ॐ द्यां द्यां उन्मादय-२, ॐ ह्रीं ह्रीं आवेशय-२, ॐ स्त्रीं स्त्रीं उच्छादय-२,
ॐ स्त्रीं स्त्रीं आकर्षय-२, ॐ हुं हुं आस्फोटय-२, ॐ त्रूं त्रूं त्रोटय-२,
ॐ छां छां छेदय-२, ॐ कूं कूं उच्चाटय-२, ॐ हूं हूं हन-हन,
ॐ जां जां मारय-मारय, ॐ घ्रीं घ्रीं घर्षय-घर्षय,
ॐ स्वीं स्वीं विध्वंसय-विध्वंसय, ॐ प्लूं प्लूं प्लावय-प्लावय,
ॐ भ्रां भ्रां भ्रामय-भ्रामय, ॐ म्रां स्त्रां? दर्शय-दर्शय,
ॐ दां दां दिशां बन्धय-दिशां बन्धय,
ॐ दीं दीं वर्तिनामेकाग्र-चित्ताविशि-कुरुतेङ्गये,
ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः । ॐ फ्रां फ्रीं फ्रूं फ्रैं फ्रौं फ्रः ।
ॐ चामुण्डायै-विच्चे स्वाहा। मम सकल-मनोरथं देहि, सर्वोपद्रवं निवारय-2, (अमुकं ??) वशे कुरु-कुरु, भूत-प्रेत-पिशाच ब्रह्म-पिशाच, ब्रह्म-राक्षस-यक्ष-यमदूत शाकिनी डाकिनी सर्वश्वापद-तस्करादिकं नाशय-नाशय मारय-मारय भंजय-भंजय ॐ भंजय-भंजय,
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं स्वाहा | * * * ॐ गणेशाय नमः । ॐ नमः शिवाय ।

|| General Information ||

विशेष – माता श्री चण्डिका का यह माला मन्त्र, घोर संकट में, अपने साधकों को अभय प्रदान करता है। विधि पूर्वक साधना करने से षट्कर्मो में सिद्धि प्राप्त होती है। शत्रु से हर प्रकार की रक्षा होती है, हर तरह के आकर्षण एवं वशीकरण कार्य मे भी सिद्धि मिलती है।
ग्रह-आदि के दोष नष्ट होते हैं। परकृत्या का नाश होता है।

माता भगवती का पंचोपचार पूजन करने के बाद संकल्प ले कर जप-आदि करना चाहिये। माता पर पूर्ण श्रद्धा रखते हुए , भक्ति भाव से , पवित्र मन से इसका पाठ करने पर लाभ अवश्य होता है।

पूजा मे थोड़ा गुरु , गणेश का पूजन और माता का कोई भी एक कवच अवश्य पाठ करें। अगर आपके गुरु हों तो उनसे अवश्य परामर्श ले लें। अगर गुरु न हों तो सधारण परिस्थिति में माता का कोई अन्य सौम्य स्तोत्र, शतनाम आदि करें। क्योंकि यह माला मन्त्र उग्र है, अतः साथ-साथ कवच का पाठ अवश्य होना चाहिये। कवच से अतिरिक्त सुरक्षा मिलती है और कार्य में शीघ्र सफलता मिलती है।

To repeat Mala Mantra 3/11/21/51/101 - repeat only Main Part .
श्री चण्डिका "माता" का एक बहुत ही उग्र, गुप्त और रहस्यमय रूप हैं,
अतः उनके किसी भी पूजा, पाठ मन्त्र-जप इत्यादि में,
कोई भी एक कवच पाठ अवश्य करना चाहिये।
कवच का पाठ हमेशा ज्यादा सुरक्षित होता है,
तथा कवच से भी साधक के सारे- कार्य सिद्ध होते है।
पर इनसे संबन्धित प्रयोग, बहुत सोच-विचार के करना चाहिये।

विशेष -तन्त्र-मन्त्र-यन्त्र, जानने-देखने-सुनने-और पढ़ने में कोई हर्ज नहीं।
पर ठीक से जाने-समझे बिना दूसरे पे कभी प्रयोग ना करें।
नोट-
कुछ कठिन शब्द * को चिन्हित करके , उसे "-" से सरल किया है,
और मूल शब्द के साथ नजदीक ही रखा गया है,
साधक लोग दोनो शब्दों को एक ही जगह पर देख कर तुलनात्मक पाठ कर सकें।
कुछ ही शब्दों का सही तरह से संधि-विच्छेद, करने का का प्रयास किया गया है।
अगर कुछ गलती/त्रुटि हो तो, क्षमा प्रार्थी हूँ।
Notes : Some word has been -
- Split using "-" to improve readability.
- Repeated using (*/-) to make easy to Read and Compare at same place.
- Taken from other books and added (++, or as "Var")
(धन्यवाद) (Share if you like)